बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
बाँदा - २१०००१ (उ0प्र0)
Banda University of Agriculture & Technology, Banda- 210001 (U.P.)

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 136 /2025) Year: 7th

जिला: बाँदा	जारी करने की तिथि: 18.08.2025

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	शाक-भाजी	➢ उठी हुई मेड़ियों पर अथवा उठी हुई क्यारियों में कद्दू वर्गीय फसलों यथा लौकी, करेला, खीरा, तरोई, आदि, भिंडी, लोबिया, ग्वार, चौलाई की बुआई कर दें। ➢ खरपतवार एवं मृदानमी के सफल प्रबंधन हेतु मेड़ियों को काली पॉलीथिन से ढकना चाहिए। कद्दू वर्गीय सब्जियों की लताओं को पंडाल सदृश संरचना बनाकर ऊपर चढ़ा दें। ➢ बैगन, टमाटर, मिर्च की नर्सरी तैयार हो तो रोपाई कर देंतथा पूर्व रोपित खड़ी फसलों में खरपतवार प्रबंधन करें। खेत से जल निकासी का भी यथावश्यक प्रबंध करें। ➢ मिर्च, टमाटर, बैगन, भिंडी में सफेद मक्खी व अन्य चूसने वाले कीट आने की संभावना है अतः उपयुक्त कीटनाशी से पादप सुरक्षा करें।
2-	शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन	शस्य.प्रबंधन इस मौसम की फसलों में खरपतवार की समस्या अधिक होती है। समय समय पर निराई गुड़ाई करते रहने से इस पर नियंत्रण रखा जा सकता है। ➢ धान की फसल में २५ दिन की अवस्था पर बिस्पायरिबैक सोडियम अथवा साथी नामक शाकनाशी का २५ ग्राम मात्रा का प्रयोग करना चाहिए। ➢ उरद एवं अरहर की फसल में इमेजाथापिर नामक शाकनाशी का प्रयोग खड़ी फसल में किया जाना चाहिए। ➢ तिल की फसल में खरपतवार नियंत्रण हेतु क्युजालोफोप इथाइल नामक शाकनाशी की ५० ग्राम सक्रिय तत्व प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करना चाहिए। ➢ शाकनाशियों का प्रयोग हमेशा फ्लेट फैन नाजल से करना चाहिए । तिल की फसल जल भराव के प्रति अधिक संवेदनशील होती है अतः जल निकास का समुचित उपाय करना चाहिए। ➢ इस समय कृषित एवं आकृषित भूमि पर, घरों के आस पास, सड़क के किनारे आदि जगहों पर गाजर की तरह पत्ती वाला सफेद फुलयुक्त पौधा बहुतायत में पाया जाता है । ➢ इस पौधे को गाजरघास य पार्थेनियम कहा जाता है । यह एक सामाजिक समस्या है और इसका निवारण सामाजिक सहयोग से ही हो सकता है । ➢ गाजरघास मानव, फसल एवं पशु स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है इस पौधे को जड़ सहित उखाड़ फेंकना चाहिए इसे उखारते समय इसके सीधे संपर्क में आने से बचना चाहिए । ➢ इसके रोकथाम के लिए ग्लाय्फोसेट नामक रासायनिक खरपतवारनाशी की १०० मिली मात्रा प्रति टैंक (१५ ली ०) पानी की दर से मौसम साफ रहने पर छिड्काव करें ।

		मृदा.प्रबंधन ➢ खरीफ में बोई गई दलहन, तिलहन फसलों एवं धान फसल में बची हुई नत्रजन उर्वरकों की मात्रा का प्रयोग करें। ➢ वर्षा के दौरान होने वाले मृदा क्षरण एवं मृदा कटाव को रोकने हेतु अपने – अपने खेतो का मेड बंधान लगातार करतें रहें। ➢ बागवानी फसलों में पौधे की उम्र एवं आवष्यकतानुसार पोषक तत्वों का प्रयोग करें। सामान्यतः प्रति पौधा प्रति वर्ष उम्र के अनुसार 100 ग्राम पोषक तत्वो का प्रयोग करना चाहिए। ➢ वर्षा के दौरान जिन भी किसान भाईयों के फसल वाले खेतों में पानी भर गया है उसका अविलम्ब निकास करने का प्रयत्न करें। ➢ जो सब्जी फसलें अभी खेतों में है उनमें आवष्यकतानुसार पोषक तत्वों का प्रयोग करें।
3-	**पशुपालन प्रबंधन**	➢ पशुओं को बाँधने के स्थान (पशुशाला) की छत को साफ व दुरुस्त रखें जिससे पानी का रिसाव न हो। ➢ वर्षा के मौसम में सभी पशुओं को अन्तः परजीवी नाशक दवाई अवश्य देवें क्यूंकि इस ऋतु में अन्तः परजीवी जैसे कृमि इत्यादि कई गुना वृद्धि दर के साथ पशुओं में होते हैं। ➢ वाहय परजीवी जैसे मक्खी, चिचिड़ी, जूँ इत्यादि का प्रकोप भी वर्षा ऋतु में बढ़ जाता है।जिसके बचाव हेतु कीटनाशक का छिड़काव पशुशाला में नियमित अंतराल पर करते रहें। साथ ही पशुशाला के निकट खरपतवार एवं घास इत्यादि न बढ़ने दें। ➢ पशुओं के दानेचारे के भण्डारगृह में भी नमी तथा पानी के जमाव से बचाना चाहिए अन्यथा दाने एवं चारे इत्यादि में कवक एवं फफूंद की वृद्धि हो सकती है और ऐसा भोजन पशुओं को देने से यह पशुओं में कैंसर का कारण भी बन सकता है। अतः यह सुनिश्चित करें की पशुओं की भोजन सामग्री सूखी जगह में संग्रहीत करे।
4–	**कीट–प्रबंधन**	➢ धान में पत्ती लपेटक के नियंत्रण हेतु खेत की निगरानी कर प्राकृतिक शत्रुओं (परभक्षी) का फसल वातावरण में संरक्षण करें। क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 1.25 ली0 प्रति0 हे0 की दर से छिड़काव करें। हरा फुदका के नियंत्रण हेतु कार्बोफ्यूरान 3 जी 20 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से बुरकाव करें। भूरा फुदका के नियंत्रण हेतु यदि सम्भव हो तो खेत से पानी निकाल देना चाहिए व यूरिया की टाप ड्रेसिंग रोक देनी चाहिए। डायनोटेफुरान 0.5 ग्राम प्रति लीटर अथवा पाईमेट्रोजिन 0.6 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार छिड़काव करें। ➢ मक्का/ज्वार/बाजरा में पत्ती लपेटक व अन्य कीट के नियंत्रण हेतु खेत एवं मेड़ों को घास मुक्त रखना चाहिये एवं मेड़ों की छटाई करना चाहिये। फसल की साप्ताहिक निगरानी करना चाहिये। रासायनिक नियंत्रण हेतु क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 1.50 लीटर मात्रा का 500–600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे0 की दर से छिड़काव करना चाहिये। ➢ मक्का में फाल आर्मीवर्म के नियंत्रण हेतु इमामेक्टिन बेंजोएट कीटनाशी की 4 ग्राम मात्रा प्रति 10 लीटर की दर से प्रयोग करें अथवा क्लोरंतरनिलीप्रोल रसायन का 4 मिलीलीटर प्रति 10 लीटर की दर से प्रयोग करें।

		➢ उर्द/मूँग में रोग के वाहक कीट सफेद मक्खी की रोकथाम के लिये पीला चिपचिपा ट्रैप का प्रयोग करें व इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस0एल0 3 मिली0 को 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। ➢ टमाटर, फूलगोभी, मिर्च, शिमला मिर्च, पत्तागोभी, बैगन की नर्सरी में प्रारम्भ में सफेद मक्खी के प्रवेश को रोकने के लिए लो–टनल पॉलीहाउस का प्रयोग करें। पूर्व में रोपित बैगन की फसल में कलंगी एवं फल बेधक कीट के नियंत्रण हेतु 10 मीटर के अन्तराल पर प्रति हेक्टेयर में 100 फेरोमोन ट्रेप लगाकर वयस्क नर कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए। सब्जियों में कीटों के नियंत्रण हेतु नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए।
5-	**पादप रोग प्रबंधन**	**बुंदेलखंड क्षेत्र के किसानों के लिए पौध रोग प्रबंधन परामर्श** अगस्त माह के दौरान लगातार वर्षा, अधिक नमी और मध्यम से उच्च तापमान के कारण फसलों में रोगों का संक्रमण तेजी से फैल सकता है। इस अवधि में विशेषकर धान, सोयाबीन, उड़द, मूंग व तिल जैसी फसलें अधिक संवेदनशील रहती हैं। निम्नलिखित सलाहों का पालन करके आप अपनी फसलों को रोगों से बचा सकते हैं। **धान के संभावित रोगः** तना गलन या शीथ ब्लाइट ब्लास्ट धब्बा रोग या झोंका रोग जीवाण पत्ती झुलसा या बैकटीरियल लीफ ब्लाईट **प्रबंधनः** ● खेत में पानी का स्तर 2–3 सेमी से अधिक न रखें और जल निकासी की व्यवस्था करें। ● शीथ ब्लाइट के नियंत्रण हेतु हेक्साकोनाजोल की 2 मिलीलीटर या थियॉफेनेट मिथाइल की 1 ग्राम मात्रा का प्रति लीटर जलीय घोल बनाकर छिड़काव करें। ● ब्लास्ट धब्बा रोग या झोंका रोग के नियंत्रण हेतु ट्राइसाइक्लोजोल की 0.6 ग्राम मात्रा प्रति लीटर या इजोप्रोथिओलेन की 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर जलीय घोल का छिड़काव करें। ● जीवाण पत्ती झुलसा या बैकटीरियल लीफ ब्लाईट के नियंत्रण हेतु स्ट्रेप्टोसाइक्लिन की 0.1 ग्राम तथा कॉपर ऑक्सीक्लोराइड की 2.5 ग्राम लीटर मात्रा का जलीय घोल बनाकर छिड़काव करें। **सोयाबीन के संभावित रोगः** जीवाणु झुलसा एन्थ्रेक्नोज पर्पल सीड स्टेन **प्रबंधनः** ● जीवाणु झुलसा के रोग निसंत्रण हेतु 2.5 ग्राम प्रति 10 किग्रा बीज की दर से स्ट्रेप्टोसाइक्लिन से बीज उपचार करें। 2.5 ग्राम प्रति 10 किग्रा पानी की दर से स्ट्रेप्टोसाइक्लिन के साथ 2.5 ग्राम लीटर की दर से कॉपर ऑक्सीक्लोराइड के जलीय घोल का छिड़काव करें। ● रोग के प्रारंभ में कार्बेन्डाजिम एवं मैनकोजेब के मिश्रण कवकनाषी का 2 ग्राम प्रति लीटर के जलीय घोल का छिड़काव करें। ● पत्तियों पर काले धब्बे या झुलसा दिखे तो क्लोरोथालोनिल कवकनाषी का 2. 5 ग्राम प्रति के जलीय घोल का छिड़काव करें। ● रोगरोधी किस्मों का प्रयोग व उचित फसल चक्र अपनाएं। **उड़द व मूंग के संभावित रोगः** ● •वेब ब्लाइट या पर्णीय झुलसा रोग •लीफ स्पॉट या पत्ती धब्बा रोग **प्रबंधनः**

		• संक्रमित पौधों को खेत से उखाड़कर नष्ट करें। • वेब ब्लाइट या पर्णीय झुलसा रोग के नियंत्रण हेतु कार्बेन्डाजिम की 1 ग्राम प्रति लीटर या प्राक्सोर कवकनाषी की 1 मिली प्रति लीटर जलीय घोल का छिड़काव करें। • पत्तियों के धब्बों में मैंकोजेब कवकनाषी की 2.5 ग्राम प्रति लीटर जलीय घोल का छिड़काव करें। **तिल के संभावित रोगः** एल्टरनेरिया पत्ताभेद या पत्ती धब्बा रोग स्टेम ब्लाइट या तना झुलरा रोग **प्रबंधनः** • रोग दिखते ही थियोफेनेट मिथाइल / 1 ग्राम प्रति लीटर या हेक्साकोनाजोल की 2 मिली प्रति लीटर के जलीय घोल का छिड़काव करें। • खेत में जलभराव न होने दें। **सामान्य सुझावः** • खेत की नियमित निगरानी करें, प्रारंभिक लक्षण पर तुरंत उपचार करें। • लगातार वर्षा के बाद फसलों में रोगनाशी छिड़काव हेतु वर्षा रुकने के 4–6 घंटे बाद ही दवा छिड़कें। • जैविक नियंत्रण हेतु ट्राइकोडर्मा हरजियानम/5–10 किग्रा प्रति एकड़ (गोबर खाद में मिलाकर) मिट्टी में डालें। • फसल अवशेषों को नष्ट करें ताकि रोगजनक अगले मौसम में न पनपे।
6.	**बागवानी. प्रबंधन**	**फलो में पौधरोपण :** अगस्त माह में प्रायः एक दो अच्छी बारिश होती है तथा वातावरण में नमी की मात्रा काफी होती है, यह समय किन्नू, माल्टा, अमरूद तथा पपीता जैसे फलवृक्ष लगाने का उत्तम समय है। परन्तु ध्यान रहे कि फलपौध उत्तम दर्जे का ही हों। पौधों को निर्धारित स्थान पर उतना ही गाड़े जितना वे नर्सरी में थे। पौधों की देख – रेख अच्छी प्रकार से करें। मूलवृन्त पर नये फुटान को हटा दें तथा पौधों को सीधा रखने के लिए बनछटी का प्रयोग करें। नियमित सिंचाई करें। **वायु अवरोधक :** वायु अवरोधकों को उत्तर – पष्चिम दिशा में इसी माह में लगायें। यदि इन्हें बाग के चारों और लगाया जायें तो और अच्छा होगा। अर्जुन, आंवला, देशी जामुन, देषी देशी आम के पौधे इस क्षेत्र के लिए उत्तम वायु अवरोधक है। वायु अवरोधकों को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए बडे पौधों के मध्य या दूसरी पंक्ति में छोटे आकार के पौधे जैसी देशी बेर, जटटी–खटटी, करौंदा, शहतूत आदि लगायें। वायु अवरोधक वृक्षों की आपस मे दूरी 4–5 मीटर रखें। इन वृक्षों की जड़ों को मुख्य बाग में जाने से रोकने के लिए 1 से 1.5 मीटर गहरी खाई इन वृक्षों के पास बाग की और खोद दें। **नर्सरी के कार्य** ➢ मूलवृन्त तैयार करने के लिए आम के गुठलियों का रोपण नर्सरी में करना चाहिए ➢ आम अमरूद मे विभेद कलम प्रवर्धन करना चाहिए ➢ आम में साईड ग्राटिंग का कार्य करना चाहिए ➢ मूलवृन्त तैयार करने हेतु रंगपुर लाइम , जट्टी – खट्टी के बीज की बुवाई नर्सरी में करें । बिजाई से पूर्व बीजे को 52 सेटीग्रेड तापमान वाले पानी से दस मिनट तक उपचारित करें, ताकि फॉइटोफथोरा बीमारी से बच जा सकें। **आम**

		सिल्ली कीट की रोकथाम के लिए 5–10 अगस्त के बीच एजाडीरेक्टिन 3000 पीपीएम ताकत का 2 मिली लिटर को पानी में घोलकर 10–15 दिनों के अंतराल पर 3 छिड़काव करें । कीट प्रभावित टहनियों के नुकीली गाँठो की छंटाई करें । **पपीता** कॉलर रॉट के प्रकोप से पौधे जमीन के सतह से ठीक ऊपर गल कर गिर जाते है । इसके नियंत्रण के लिए पौधशाला से पौधों को रिडोमिल (2 ग्रा./ली.) दवा का छिड़काव करें, खेत में जलभराव न होने दें और जरूरत पड़ने पर खड़ी फल में भी रिडोमिल (2 ग्रा. /ली.) के घोल से जल सिंचन करें । **केला** पनामा विल्ट के रोकथाम के लिए बैविस्टीन के 1.5 मिली. ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल से पौधों के चारों तरफ की मिट्टी को 20 दिन के अंतराल से दो बार छिड़काव कर देना चाहिए । **अमरुद** जस्ता तत्व की कमी होने से पत्तियों का पिला पड़ना, छोटा होना तथा पौधों की बढ़वार कम हो जाने के लक्षण मिलते है । इसके नियंत्रण के लिए 2 प्रतिशत जिंक सल्फेट का छिड़काव अथवा 300 ग्रा. जिंक सल्फेट का पौधों की जड़ों में देना लाभप्रद पाया गया है । **कटहल** तना बेधक कीट के नियंत्रण हेतु छिद्र को किसी पतले तार से साफ करके नुवाक्रान का घोल (10 मिली.ली.) अथवा पेट्रोल या केरोसिन तेल के चार–पाँच बूंद रुई में डालकर गीली चिकनी मिट्टी से बंद कर दें । इस प्रकार वाष्पीकृत गंध के प्रभाव से तना बेधक कीट मर जाते हैं एवं तने में बने छिद्र धीरे–धीरे भर जाते हैं ।
7.	**वानिकी प्रबंधन**	➢ पॉलीथीन थैलियों जिनमें बीज अंकुरित नहीं हुए हैं को स्वस्थ व विकसित पौध से प्रतिस्थापित/प्रत्यारोपित करें। ➢ वानिकी पौधशाला को खरपतवार से मुक्त रखने तथ जल निकासी नालियों/चैनलों को साफ रखें। ➢ पौधशाला में आद्रपतन या कमरतोड रोग की रोकथाम हेतु कार्बेन्डाजिम (10ग्राम)+मेन्कोजेब(25ग्राम) प्रति लीटर पानी के घोल से रोक के लक्षण दिखते ही सिंचाई करें। ➢ जून / जुलाई माह में रोपित पौध, जो कि मृत हो गए हैं, स्वस्थ पौधों से प्रत्यारोपित करें। ➢ रोपित पौधें के थालों में निराई गुड़ाई करें तथा साथ ही साथ उजागर जड़ों को पुनः मिट्टी से आच्छादित करें।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार	7. डॉ दिनेश गुप्ता
2. डॉ दिनेश साह	8. डॉ पंकज कुमार ओझा
3. डॉ ए.सी. मिश्रा	9. डॉ सुभाष चंद्र सिंह
4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव	10. डॉ जगन्नाथ पाठक
5. डॉ राकेश पाण्डेय	11. डॉ धर्मेन्द्र कुमार
6. डॉ मयंक दुबे	